भगवान श्रीरामकृष्ण देव का 190 वाँ शुभ जन्मोत्सव

शनिवार, 1 मार्च, 2025

Ramakrishna Mission Sevashrama

Swami Vivekananda Path, Bela, Muzaffarpur (Bihar), Phone: 0621-2272127, 2272963
E-mail: rkm.muzaffarpur@gmail.com, Website: www.rkmsmuzaffarpur.org

रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम

स्वामी विवेकानंद पथ, बेला, मुजफ्फरपुर -842002

दिनांक: 20 फरवरी, 2025

देवियो एवं सज्जनो,

श्रीरामकृष्ण देव के 190 वें शुभ जन्मतिथि के उपलक्ष्य में शनिवार, 1 मार्च, 2025 को रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, मुजफ्फरपुर में विशेष पूजा, भजन-संकीर्तन, होम आदि का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर शिक्षक सम्मेलन (Teachers' Convention) की भी व्यवस्था की गई है।

इन कार्यक्रमों में सपरिवार एवं मित्र सहित आपकी उपस्थिति की कामना की जाती है।

ईशानुरागी,
स्वामी भावात्मानन्द
सचिव

कार्यक्रम
शनिवार, 1 मार्च, 2025

मंगल आरती	प्रात : 5.00 बजे
वैदिक स्तोत्रपाठ	प्रात : 5.05 बजे
विशेष पूजा, होम, पुष्पांजलि, भजन	प्रात : 7.00 बजे
शिक्षक सम्मेलन	प्रात : 10.00 बजे
प्रसाद वितरण	दोपहर : 01.15 बजे
संध्या आरती, भजन	संध्या : 6.00 बजे

द्रष्टव्यः

इस पावन अवसर पर आपका दान सादर, सधन्यवाद गृहीत होगा। रामकृष्ण मिशन को दिया गया दान इनकम टैक्स 1961 की धारा 80-G के अधीन आयकर मुक्त है। दान की राशि हमारे RAMAKRISHNA MISSION SEVASHRAMA, MUZAFFARPUR के State Bank of India, Account No. : 10877071752, IFS Code : SBIN0006016 में जमा कर सकते हैं। कृपया इसकी सूचना ई-मेल द्वारा दें।

शिक्षक सम्मेलन

श्री रामकृष्ण परमहंस के 190वें जन्मतिथि उत्सव के उपलक्ष्य में

कार्यक्रम: शनिवार, 1 मार्च, 2025: प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक

वैदिक मंत्र तथा गीता पाठ: विवेकानंद स्टडि सर्किल के सदस्य तथा साधुगण	10 Min
उद्बोधन संगीत: ब्रह्मचारी भूमा चैतन्य	10 Min
स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश: स्वामी सिद्धीशानन्द	10 Min
श्रीरामकृष्णवचनमृत से पाठ: श्री जय नारायण सिंह	10 Min
विद्यालय के छात्रों के द्वारा संगीत	10 Min
'श्री रामकृष्ण की जीवनी एवं उनके संदेश'- प्रवचन: स्वामी भावात्मानन्द	30 Min
मार्गदर्शित ध्यान एवं चिंतन	10 Min
प्रतिभागी शिक्षकों के द्वारा श्री रामकृष्ण की जीवनी एवं उनके संदेश पर टिप्पणियाँ	30 Min
श्री रामकृष्ण जीवन पर लघु नाटिका: माउन्टेन व्यू विद्यालय के छात्र	15 Min
चर्चा: इंटरनेट- मित्र या शत्रु: श्री संजीव कुमार	15 Min
शिक्षकों और छात्रों के प्रति: प्रो. श्री नारायण सिंह	10 Min
धन्यवाद ज्ञापन: स्वामी बलप्रदानन्द	10 Min
समापन संगीत: ब्रह्मचारी भूमा चैतन्य	10 Min

सभा संचालन: स्वामी लीलामयानन्द

समाचार संपादन: श्री जयनारायण सिंह

प्रसाद वितरण: 1:00 PM

श्री रामकृष्ण परमहंस के उपदेश

- मनुष्य अपने आप को पहचानने से भगवान को पहचान सकता है। "मैं कौन हूँ?" भलीभाँति विचार करने पर मालूम होता है कि 'मैं' नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। हाथ, पैर, खून, मांस इत्यादि-इनमें से 'मैं' कौन है? जिस प्रकार प्याज का छिलका अलग करते करते छिलका ही निकलता जाता है, शेष कुछ बचता ही नहीं उसी तरह विचार करने पर 'अपनत्व' के नाम से कुछ भी बच नहीं रहता। अन्त में जो कुछ रहता है, वही आत्मा या चैतन्य है। 'अहंभाव' दूर हो जाने पर भगवान के दर्शन होते हैं।
- 'मैं' दो तरह का होता है। एक है 'पक्का मैं' और दूसरा 'कच्चा मैं'। 'मेरा मकान', 'मेरा घर', 'मेरा लड़का' यह सब 'कच्चा मैं' है। और 'पक्का मैं' है 'मैं उनका दास', 'मैं उनकी सन्तान' और 'मैं वही नित्य-मुक्त ज्ञानस्वरूप हूँ।'
- 'मैं' का बोध रहने से 'तुम' का भी बोध रहेगा। जैसे, जिसे उजाले का ज्ञान है, उसे अँधेरे का ज्ञान भी अवश्य रहेगा; जिसे अच्छे का ज्ञान है, उसे बुरे का भी ज्ञान रहेगा, जिसे पुण्य का ज्ञान है, उसे पाप का भी ज्ञान अवश्य होगा।
- जैसे जूते पहनकर निःशंक काँटों पर चला जा सकता है, उसी तरह 'तत्त्वज्ञान' का आवरण पहनकर मन इस काँटेदार संसार में विचरण कर सकता है।
- भगवान सब के भीतर किस प्रकार विराजते हैं?- जैसे चिक की आड़ में बड़े घराने की स्त्रियाँ; वे सब को देखती है, पर उनको कोई नहीं देख पाता। भगवान भी इसी प्रकार सब में विद्यमान है।
- ब्रह्म और शक्ति अभित्र हैं; ब्रह्म जब सर्वकर्मरहित अवस्था में रहते हैं, तब उनको ब्रह्म या शुद्ध ब्रह्म कहा जाता है। और जब सृष्टि, स्थिति और प्रलय इत्यादि करते हैं, तब ये सब उनकी शक्ति के कार्य कहे जाते हैं।
- साकार और निराकार ये दोनों किस प्रकार हैं? जैसे जल और बरफ। जब जल जम जाता है तब बरफ कहलाता है और साकार हो जाता है। और जब गलकर जल हो जाता है, तब निराकार कहलाता है।
- जो साकार है, वही निराकार। साकार रूप से वही भक्तों को दर्शन देता है। जैसे, महासमुद्र में केवल अनन्त जलराशि होती है, उसका कूल-किनारा कुछ नहीं; परन्तु कहीं कहीं अत्यन्त ठण्डक पड़ने के कारण पानी जमकर बर्फ के रूप में दिखाई देता है; उसी प्रकार भक्तों के भक्तिरूपी हिम से निराकार परमात्मा का भी साकार रूप में दर्शन होता है। फिर सूर्यनारायण के उदय होते ही जैसे बर्फ गल जाता है और पहले की भाँति जल मात्र ही रह जाता है, वैसे ही ज्ञानरूपी सूर्यभगवान के प्रकाशित होने पर साकाररूप बर्फ पिघलकर केवल जलरूप निराकार ही विद्यमान रहता है।
- साँप के दाँतों में विष है; वह जब स्वयं खाता है, तब विष उस पर प्रभाव नहीं करता। परन्तु जब वह दूसरे को काटता है, तब विष उस व्यक्ति पर प्रभाव कर जाता है। इसी प्रकार, भगवान में माया है तो अवश्य, पर वह उनको मुग्ध नहीं कर सकती, लेकिन दूसरों को वशीभूत कर लेती है।
- माया किसे कहते हैं? माँ, बाप, भाई, स्त्री, पुत्र, भानजा, भतीजा, इन सब पर जो मोह है, वही माया है और दया का अर्थ- सर्व भूतों में हमारे हरि विराजमान हैं, यह समझकर सब से बराबर प्रेम करना।
- जिस पर भूत आता है, वह यदि जान जाए कि भूत आया है, तो भूत भाग जाता है। मायामुग्ध जीव यदि एक बार ठीक से जान ले कि वह माया द्वारा ग्रसित है, तो माया उसे शीघ्र ही छोड़ जाती है।